International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 2, Issue.2, Feb 2014
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

'' देश स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय समाज में नारियों के प्रति निकृष्ट रीति–रिवाजों एवं अमानवीय प्रथाऍं के विशेष सन्दर्भ में ''

शोधार्थी
श्रीमती सुनीता पन्द्रो
एम.ए. नेटक्वालीफाइट
(समाजशास्त्र)
बरकतउल्लाह वि.वि. भोपाल, (म.प्र.)

सारांश :–

भारतीय समाज में सदियों से कई निकृष्ट रीति–रिवाज एवं अमानवीय प्रथाऍं चली आ रही थी। यद्यपि पुराणों तथा धर्म ग्रंथों में मातृप्रद को पितृपद से उच्च माना गया है। विदेशियों से स्त्रियों को सुरक्षित रखने, संकुचित मानसिकता पुरूषों के प्रभुत्व तथा भेद–भावपूर्ण व्यवहार आदि के कारण भारतीय समाज में निर्मित कठोर नियम थे, जिनकी ओर कुछ उदरवादी ब्रिटिश प्रशासकों का ध्यान आकर्षित हुआ। देश की बागडोर व्यापारिक विदेशी कंपनियों के हाथ में जाने से भारत की आर्थिक एंव सामाजिक दशा दयनीय हो गयी थी। भोगवादिता तथा विलासिता के कारण औरत पिंजरे की मैना बन कर रह गई यहां तक कि ग्रेट–ब्रिटेन जो कि ज्ञान–विज्ञान में अग्रणी माना जाता है वहां भी महिलाओं को मात्र वोट का अधिकार पाने के लिए 80 वर्षो तक संघर्ष करना पड़ा। भारतीय फिल्म जगत के माध्यम से भी नारियों की स्थिति को प्रदर्शित किया गया ताकि लोगों के मन से कुरितियों और अन्धविश्वासों से पर्दा उठ सके।

मनोरंजन के माध्यम से घटनाओं का प्रदर्शन दर्शकों को मन में नारी के प्रति सहिष्णुता तथा स्वस्थ्य से घटनाओं का प्रदर्शन दर्शक को मन में नारी के प्रति सहिष्णुता तथा स्वस्थ्य दृष्टिकोणों को अपनाने के लिए किया गया। नारी समस्याओं को उकेरती बोलती फिल्मों के द्वारा नारी को विकास की ओर उन्मुख

Please cite this Article as : श्रीमती सुनीता पन्द्रो, देश स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय समाज में नारियों के प्रति निकृष्ट रीति–रिवाजों एवं अमानवीय प्रथाऍं के विशेष सन्दर्भ म:International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.2, feb 2014

करने का प्रयास किया गया कुछ फिल्मों के नाम निम्नलिखित है जो नारी समस्याओं पर प्रकाश डालते है :–

नारी की स्थिति को प्रदर्शित करती फिल्मों के नाम

क्रं.	प्रदर्शन वर्ष	फिल्म का नाम	प्रकृति
1.	1934	इंदिरा मां	भारतीय संस्कृति तथा पश्चात्य सभ्यता का टकराव।
2.	1936	अछूत कन्या	जातिगत तथा धार्मिक रूढ़ियों के समापन पर आधारित
3.	1936	बालयोगिनी	विधवा पुर्नविवाह
4.	1937	दुनियां न माने	अनमेल विवाह से सम्बंधित
5.	1940	अछूत	दलित उत्पीड़न
6.	1941	माई सिस्टर	रक्तदान एंव नर्स सेवा
7.	1943	विजय लक्ष्मी	विदेशी वस्तुओं का बष्किार
8.	1948	विजयलक्ष्मी	विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
9.	1905	दहेज	दहेज समस्या पर आधारित
10.	1951	राजमनी	दहेज समस्या पर आधारित

स्वतंत्रता पूर्व नारियों की स्थिति

इस प्रकार नारियों की स्थिति स्वतंत्रता से पूर्व अत्यंत दुःखद थी। स्त्री भाई, पिता, तथा पुत्र के अधीन हो रही है। नारी को प्राचीन महप तथा आधुनिक किसी भी काल में स्वतंत्रता नहीं मिली। कुछ बड़े घरानों की स्त्रियॉ तो सिर्फ अपने घरों तक ही सीमित रह गई। वे अपने पति तथा बुजुर्गो द्वारा कमाई गई सम्पति का उपभोग करते हुए एक सीमत दायरे में थी। कुछ पुरूषों के निश्चित घरों तक ही उनका आना–जाना हो पाया था। इस स्थान को भी उनके घर

के पुरूषों के द्वारा ही चुना जाता था। इस प्रकार आधुनिक काल का स्वतंत्रता से पूर्व का समय नारियों के उत्पीडन का समय ही कुछ जा सकता है।

स्वतंत्रता के पूर्व भारत में मुगलों के बाद ब्रिटिश शासक आये। ब्रिटिश शासकों नें भारत की परम्परागत सामाजिक और आर्थिक स्थिति को छिन–भिन्न कर डाला है तथा कई प्रकार से सामजिक शोषण किया। लेकिन कुछ उदारवादी ब्रिटिश शासकों स्वंय इसका विरोध किया तथा भारतीयों के लिए भी उन्होंने शिक्षा तथा नौकरी के प्रबंध किये। भारतीयों ने भी अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। इस प्रकार ब्रिटिश आधिपत्य का भारतीय समाज पर दूरगामी प्रभाव पडा इसी प्रभाव के परिणाम स्वरूप भारतीय जनता ने अपनी सामाजिक दुर्बलताओं की छानबीन की। शिक्षा प्रणाली का पुर्नगणन, सती–प्रथा का का उन्मूलन, बालिका हत्या पर प्रतिबंध और विधवाओं के लिए पुर्नविचार संबंधी नियम बनाये गये। भारतीय वैदिक संस्कृति का अध्ययन गर्व की बात लगने लगी। अतः भारतीय समाज के समुदाओं में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के आन्दोलनों का आरंभ हुआ। धर्म के क्षेत्र में इन आंदोलनों ने कट्टरता, अंधविश्वासों तथा पुरोहितों के वर्चस्व पर हमले किए। सामाजिक जीवन में इनका उद्देश्य जाति–प्रथा, बाल–विवाह, सती–प्रथा का उन्मूलन मुख्य था तथा स्त्रियों को समाज में पुनः अच्छी स्थिति में लाना उनका उद्देश्य बन गया। इसी तारतम्य में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि ''एक पंख से चिड़ियां कभी उड़ान नहीं भर सकती''। स्त्री–पुरूष समाज रूपी रथ के दो पहियों है यदि एक पहिये कमजोर हो तो रथ में अपूर्णता होगी। राजाराम मोहनराय (1972–1833) महादेव गोविंद रानाडे (1841–1901) स्वामी दयानंद सरस्वती एनीबोसेन्ट, गांधी जी, रामानन्द संतकबीर, श्री चैतन्य आदि समाज सुधारकों ने नारियों पर अमानवीय व्यवहार के विरूद्ध आवाज उठाई। भारतीय में शिक्षित होने के साथ उनमें नवजागरण आया। धार्मिक–सामाजिक विकास के साथ–साथ आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास हुआ सामाजिक विकास में स्त्री– पुरूष की समानता को स्वीकारा गया। भरतीय विद्धानों ने प्राचीन विद्या का अन्वेषण किया, जिससे प्राचीन भारत के दर्शन विज्ञान, तथा साहित्य की जानकारी ने उनके हृदय में अपनी सभ्यता के प्रति गर्व का अनुभव कराया, जिसका परिणाम स्वतंत्रता तथा स्वतंत्र भारत की व्यवस्था थी, जिसमें स्त्रियों को शिक्षा तथा सम्मान का पात्र बनाया गया तथा महिला

उद्धार आन्दोलन तथा सुधार अधिनियमों को स्थान मिला। 1921 से पूर्व भारतीय (भारतीय–नारियों) को मताधिकार प्राप्त नहीं था। किन्तु 1921 के निर्वाचन अधिनियम में सभी को मताधिकार दिया गया। इस सुधार से दस वर्ष के अंदर ही सारे भारत में नारियों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया। सन् 1926 में विधान सभा सदस्य होने का अधिकार प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष :–

समाज में नर और नारी दोंनों परमात्म चेतना की दो धारायें हैं इन धाराओं के प्रगाढ़, प्रबल तथा सुयोग सुमेल से संसार की रचना होती हैं नारी के बिना सृष्टि की रचना असंभव हैं इस कटु के बावजूद भी आज नारी के इज्जत, मान मर्यादा का आहत करने के लिए दुःशासन तैयार रहते है। एक नारी होने के नाते शोधार्थी में स्वतंत्रता पूर्व भारतीय नारी की स्थिति को भारतीय समाज में अत्यन्त दुःखद थी। स्त्री भाई, पिता, तथा पुत्र के अधीन हो रही है। स्त्री को प्राचीन, महप तथा आधुनिक किसी भी काल में स्वतंत्रता नहीं मिली। कुछ बड़े घरानों की नारियॉ तो सिर्फ अपने घरों तक ही सीमित रह गई। ये अपने पति तथा बुजुर्गो द्वारा कमाई गई सम्पति का उपभोग करते हुए एक सीमत दायरे मे थी। कुछ पुरूषों के निश्चित घरों तक ही उनका आना जाना हो पाया था। इस स्थान को भी उनके घर के पुरूषों के द्वारा को ही चुना जाता था। इस प्रकार आधुनिक काल का स्वतंत्रता से पूर्व का समय भारतीय समाज में उत्पीड़न का समय ही कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. देसाई नीरा – 'भारतीय समाज में नारी'
2. बंघेल डॉ.डी.एस. – 'नगरीय समाजशास्त्र' म0प्र0 हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल 1993
3. मिश्रा डॉ. विजया – 'गर्भधारण एवं पालन पोषण की मान्यतायें शोध प्रबंध',1998, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर।
4. अल्लतेकर ए.एस. – 'दि पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू' सिविलाईजेशन, बनारस, 1938
5. यादव डॉ. वासुदेव प्रसाद– 'मनोरमा, 1993

6. कपाड़िया के.एस. – 'मैरिज एण्ड फैमिली इन इण्डिया', इन्डिया, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1977

7. मेचेन्ट, के.टी. – ''चेजिंग व्यूज ऑन मेरिज एंड फैमिली, 1935